आचार्य रामचंद्र शुक्ल के साहित्य – सम्बन्धी विचार –

आचार्य रामचंद्र शुक्ल एक सुविख्यात निबंधकार एवं प्रबुद्ध समालोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने लगभग सभी विधाओं में साहित्यिक रचना की है इनकी कविता, कहानी, नाटक आदि रचनाओं की विद्वानों ने भूरि – भूरि प्रशंसा की है। इनकी कहानी ' ग्यारह वर्ष का समय' को आधुनिक हिंदी की पहली कहानी के रूप में भी विद्वानों ने स्वीकार किया है। इन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिंदी साहित्य को निरंतर समृद्ध किया। कविता, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, अनुवाद इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके हिंदी साहित्य की निरंतर सेवा करते रहे। इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली में कविताएँ लिखीं। एडविन आर्नल्ड के 'लाइट ऑफ एशिया' का ब्रजभाषा में 'बुद्धचरित' शीर्षक से पद्यानुवाद किया। सन् 1919 में मालवीय जी के आग्रह पर अध्यापन आरंभ किया। अध्यापन के ही क्रम में उन्होंने पाठ्यक्रम के अनुरूप स्तरीय ग्रंथों की रचना भी की और संपादन भी किया। 'रस मीमांसा' तथा 'चिंतामणि' में संग्रहित निबंध उनकी निबंध – कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। शुक्ल जी के मनोवैज्ञानिक निबंधों के लिए साहित्य – जगत में उन्हें विशेष प्रतिष्ठा दी जाती है। जायसी, तुलसी और सूर पर लिखी उनकी आलोचनाएँ छात्रों में साहित्यिक दृष्टि और समझ विकसित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती रही हैं। उनका लिखा 'हिंदी साहित्य का इतिहास' हिंदी साहित्य के इतिहास – लेखन की परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस इतिहास को ही हिंदी साहित्य का पहला सुव्यवस्थित इतिहास ग्रंथ माना जाता है, जो कालविभाजन एवं युगीन प्रवृत्तियों का पूर्ण विवेचन करके लिखा गया है। इससे पहले जो हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथ लिखे गए थे वे प्रायः कवियों के जीवन – वृत संग्रह हो गए थे। इसीलिए इनकी इतिहास पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में मील का पत्थर माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल को आधुनिक हिंदी साहित्य में आलोचना के प्रमुख आचार्य के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। उन्होंने पारंपरिक काव्य – चिंतन को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्पन्न किया। भारतीय काव्य – चिंतन को पाश्चात्य काव्य – चिंतन के आलोक में पुनर्व्याख्यायित करके समृद्ध और प्रासंगिक बनाया। एक ओर शुक्ल जी भारतीय आचार्यों भरत, अभिनवगुप्त, मम्मट आदि की परंपरा से जुड़े दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर अरस्तू, आर्नल्ड, रिचर्ड्स और इलियट के सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए दिखाई देते हैं। उनकी आलोचना दृष्टि वैज्ञानिक, प्रगतिशील एवं इहलौकिक थी। उनके नाम पर ही 1918 से 1936 तक के कालखंड को आलोचना के क्षेत्र में में 'शुक्ल युग' कहा जाता है जैसे कथा साहित्य में 'प्रेमचंद युग' और नाटक में 'प्रसाद युग' कहा जाता है।

आचार्य शुक्ल साहित्य के बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा उसके आत्म तत्व, रचनाकार की दृष्टि और रचना के उद्देश्य को अधिक महत्व देते हैं। शुक्ल जी आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख आचार्य, निबंधकार और आलोचक हैं। यद्यपि इनका सर्जनात्मक साहित्य, अनुवाद साहित्य भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथापि निबंध और आलोचना के क्षेत्र में इनका साहित्यिक योगदान अप्रतिम है। ये अपने निबंधों में विषय की गंभीरता को अंतर्भेदी दृष्टि से देखते हैं। उन्होंने मनोविकारों पर भी निबंध लिखे हैं।

विद्वानों ने उनके निबंधों को तीन वर्गों में बांटा है –

1.वैचारिक निबंध

2.सैद्धांतिक निबंध

3. व्यावहारिक निबंध

उनकी वैचारिकता अत्यंत गहन है तथा भाषा – शैली असाधारण है। भाषा के प्रति वे अत्यधिक सजग हैं। विषय के अनुरूप ही भाषा का चयन करते हैं। अनेक स्थानों पर बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग कर विषय को बोझिल होने से बचा लेते हैं। बोलचाल की भाषा पाठक के मन को हल्का कर देती है और इस प्रकार वह गंभीर से गंभीर विषय को सहजतापूर्वक हृदयंगम कर लेता है। जैसे – 'लोभ और प्रीति' निबंध में उन्होंने जिक्र किया है कि महुए का नाम लेने से बाबुपने को बट्टा लगता है। इस प्रकार गंभीर विषय – विवेचन के मध्य भी वे हास्य के अवसर उपस्थित कर देते हैं और गम्भीर विषय को सरल भी बना देते हैं। स्थान – स्थान पर लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग करके भाषा में चार चाँद लगा देते हैं। हिंदी गद्य विधाओं को उन्होंने खूब समृद्ध किया है। उनके निबंध और उनकी आलोचनाएँ आधुनिक हिंदी – साहित्य की अमूल्य धरोहर है।